National Journal of Multidisciplinary Research And Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-01-2021; Accepted: 12-02-2021; Published: 27-02-2021
www.multidisciplinaryjournal.org
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 29-32

सामाजिक समरसता और जायसी

सुनीता मिश्रा
असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, गामदेवी, मुंबई, माहाराष्ट्रा, भारत

सारांश
समरसता अर्थात ऐसी समानता जहाँ किसी भी प्रकार की भिन्नता ना हो। सम यानि समानता। किसी भी देश की उन्नति का मूल आधार यदि सामाजिक समरसता को माने तो इसमें कोई अतिश्योक्ति न होगी क्योंकि सामाजिक समरसता का मूल उद्देश्य है एक समाज का दूसरे समाज के बीच भाईचारा, अपनत्व और सद्भावना का निर्माण करना यही सामाजिक एकता है और यही एकता विकास का मूल मन्त्र है। समाजिक समरसता को स्थापित करने हेतु धर्म, दर्शन, अध्यात्म व सांस्कृतिक समन्वय की भवना के पथ पर चलने की आवश्यकता होती है। हमारे देश के सामाजिक कर्मठ कार्यकर्ताओं, सच्चे धर्मगुरुओं,दर्शनशास्त्रियों एवं साहित्यकारों ने समय और परिस्थिति के अनुसार इस मार्ग का चयन किया और सामाजिक एकता को स्थापित करने का अथक प्रयास भी किया है। बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक, बहुदर्शन वाले हमारे देश को इस सन्मार्ग को समझने व उसपर चलने की अत्यंत आवश्यकता है इसे हम सभी ने महसूस किया है और इसी एहसास को जब समय की बदलती परिस्थितियों ने चोट पहुंचाने का प्रयास किया तब विद्वानों ने खासकर हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक समरसता का पाठ पढ़ाकर देश की अखंडता को खंडित होने से बचाने की कोशिश की है। इस दृष्टि से मध्यकाल का भक्तिसाहित्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है जहाँ भक्त कवियों ने शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, आत्मीयता, समन्वय, बंधुत्वभाव, तथा सर्वहित पर बल दिया और यही तो सामाजिक समरसता के मुख्य घटक हैं। किसी भी स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए स्वतंत्रता,बंधुता और समानता की आवश्यकता होती है और यह सामाजिक समरसता से सम्भव हो सकती है। हिंदी साहित्य के भक्त कवियों ने अपने साहित्य के माध्यम से मानव समाज को यही पाठ पढ़ाया है फिर चाहे सन्त कवि हों या सूफी कवि।
मलिकमुहम्मद जायसी हिंदी भक्ति साहित्य के ऐसे ही कवि हैं जिन्होंने अपने काव्य ने समन्वय के माध्यम से सांस्कृतिक व धार्मिक एकता को स्थापित किया जो उस समय के विकृत समाज के लिए बहुत जरूरी था। मुस्लिम दरबारी कवि होकर भी उन्होंने प्रचलित हिन्दू प्रेमकथाओं को अपने काव्य का विषय चुना और मुस्लिम संस्कृति के साथ–साथ हिन्दू संस्कृति को भी बढ़ावा दिया। उन्होंने अपने महाकाव्य श्पद्मावतश में सिंहलद्वीप की पद्मावती और चित्तौड़ के रत्नसेन की प्रेमकथा को आधार बनाकर हिन्दू संस्कृति का बहुत सुंदर चित्रण किया है। धर्म व दर्शन तथा अध्यात्म में भी जायसी ने समन्वय करते हुए हिन्दू देवी–देवताओं, धार्मिक प्रतीकों,परम्पराओं का चित्रण किया है साथ ही हठयोगियों,सहजयानियों, बौद्धों का अद्वैतवाद आदि का आध्यात्मिक दृष्टिकोण व दर्शन जायसी काव्य में मुस्लिम धर्म व दर्शन के साथ समन्वित हुआ है क्योंकि जायसी की नजर में सभी मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं,एक समान हैं चाहे वो किसी भी धर्म या जाति के हों सभी को साथ साथ रहकर प्रेम व सम्मान से समाज में जीने का हक है। कवि का यही भाव उसकी सामाजिक समरसता का परिचायक है।

मूल शब्दः समरसता, समन्वय, सात्विक, सांस्कृतिक समरसता, एकछत्र, सार्वभौम, मनमुटाव, बारहमासा, हठयोग, राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, कुठाराघात आदि।

प्रस्तावना
सामाजिक समरसता का संक्षेप में अर्थ श्सामाजिक समानता है और व्यापक अर्थ में देखे तो इसका अर्थ जातिगत भेदभाव एवं अस्पृश्यता का जड़ मूल से उन्मूलन कर लोगों में परस्पर प्रेम एवं सौहार्द बढ़ाना तथा समाज के सभी वर्गों एवं वर्णों के मध्य एकता स्थापित करना है। दूसरे अर्थों में समरसता का अर्थ है देश में रहने वाली पूरी प्रजा में एक दूसरे के प्रति अपनत्व का भाव। किसी भी देश की प्राणशक्ति समरसता इस एक शब्द में समाहित है। देखा जाए तो समरसता का अर्थ सामाजिक बंधु भाव है। हम जानते हैं कि भारत का समाज जाति पाति धर्म के भेदभाव के कारण दुर्बल हुआ। जब हम सब एक हैं एक ही ईश्वर की संतान हैं भारत माता की संतान हैं सात्विक रूप से एक ही ब्रह्म के हम विविध रूप हैं यह भावना समाज से वितरित हो गई तब स्वार्थजनित वृत्ति के कारण जाति व धर्म की दीवारें खड़ी हो गई जिसने समाज को खोखला और कमजोर बना दिया फिर समाज को जैसे लकवा मार गया।
सृष्टि में सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान है और उनमें एक ही चौतन्य विद्यमान है इस बात को हमें हृदय से स्वीकार करना चाहिए तभी समानता का भाव विकसित होगा। हमारा भारत देश एक बहुधर्मीय,और बहूभाषीय, बहुजातीय समाज का देश है और हर धर्म, जाति के अपने–अपने नियम जिस वजह से कई मायनों में लोगों में भेदभाव होता है,जो किसी भी देश व समाज के विकास में बाधक है। इसके कारण ही कई सामाजिक समस्याएं उत्पन्न होती हैं। जब देश के लोग एक होंगे तब देश में एकता होगी और अगर देश में कोई समस्या होगी तो सभी लोग मिलकर समस्याओं को दूर करने का प्रयत्न करेंगे। जब ऐसा होगा तब समाज आगे बढ़ेगा देश विकसित होगा। यही समरसता है।
अर्थात सामाजिक समरसता से तात्पर्य समस्या को समाप्त करके समाज के सभी वर्गों के लोगों में प्रेम भाव उत्पन्न करना। समाज के सभी लोग मिलजुलकर प्रेम पूर्वक रहे और उनमें एकता हो यही सामाजिक समरसता कहलाती है,और जिस देश में सामाजिक समरसता होती है वह देश व समाज बहुत तेजी से विकास करता है
मध्यकाल के समाज में कई विघटनकारी तत्व विद्यमान थे जो तेजी से धर्म,जाति, वर्ण ,भाषा,छुआछूत आदि के नाम पर समाज के टुकड़े कर उसे खोखला कर रहे थे। ऐसी स्थिति में त्राही–त्राही करते समाज के लोगों को सही दिशा देने का बेड़ा भक्त कवियों ने उठाया फिर चाहे वो निर्गुण भक्तिधारा के सन्त या सूफी कवि हों या सगुन भक्ति करनेवाले राम व कृष्ण भक्तिधारा के कवि। सभी का उद्देश्य समाज की दशा को सुधारना था और सभी ने यह प्रयास अपने–अपने स्तर पर किया। सूफी कवि

जायसी भी उनमें से एक थे। जायसी प्रेममार्गी भक्ति शाखा के उदारवृत्ति वाले लेखक थे। मुस्लिम होकर भी मलिक मुहम्मद जायसी ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए अपने काव्य में सामाजिक समरसता की अभिव्यक्ति की है। वो एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने सन्त कवियों की तरह समाज को खंडित करनेवालों को फटकारा तो नहीं किंतु उन्हें छोड़ा भी नहीं। उनपर प्रेम की छुरी चलाकर काट दिया और जता दिया कि समाज और मानवता के दुश्मनों को उनके मकसद में आगे बढ़ने नहीं देंगे और ना ही समाज को तोड़ने देंगे। अपने इसी प्रेम व मानवतावादी धरातल को सामाजिक समरसता के माध्यम से सामाजिक एकता स्थापित करने का प्रयास जायसी ने किया है। जायसी ने धर्म, संस्कृ ति,भाषा आदि सभी स्तरों पर सामाजिक समरसता को प्रस्तुत किया है।

सांस्कृतिक समरसता

संस्कृति किसी भी समाज की समरसता की मजबूत डोर है। सांस्कृतिक एकता सामाजिक समरसता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत की विशालता,महानता में उसकी संस्कृति है जो विभिन्न संस्कृतियों की रंग स्थली है।। वैदिक युग से लेकर कंप्यूटर युग तक भारत स्वयं में अनेक संस्कृतियों को समाहित किए हुए हैं। भारतीय संस्कृति ने सभी को गले लगाया तथा अपने रंग में रंग लिया।यह उसकी विशालता है।यदि देखा जाए तो संपन्नता का आधार अनेकता में सामंजस्य है। हमारे समाज में सांस्कृतिक भेद व अभेद दोनों ही हैं। यदि प्राचीन समय को देखें तो उस समय में संस्कृति में अंतर्निहित द्वेष कभी– कभी प्रबल होते थे किंतु भारतवासी एकछत्र सार्वभौम से अपरिचित ना थे। राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ आदि खंडित राष्ट्रीय एकता की अविरल धारा का रूप धारण करने के उद्देश्य से होते थे। इतिहास गवाह है हमारे धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें सांस्कृतिक एकता है। यदि मुसलमान व ईसाइयों ने यहां की संस्कृति को प्रभावित किया है तो वे यहां की संस्कृति से प्रभावित भी हुए हैं। किंतु हमारी यह विडम्बना है कि समय– समय पर स्वार्थी लोगों द्वारा अनेक प्रकार के स्वार्थ के लिए हमारे सामंजस्य पर कुठाराघात कर आपसी मनमुटाव को विस्तार दिया गया। फूट डाल कर अपना उल्लू सीधा किया गया और इससे समाज के लोगों में हीनता की वृत्ति पनपी। हमारी राष्ट्रीयता को चुनौती देने के निमित्त उत्तर दक्षिण अवर्ण हिंदू मुसलमान,सिख, इसाई,जैन,बौद्ध के धार्मिक भेद खंडित कर हमारी संगठित इकाई को क्षति पहुंचाई गई है। भाषा का बवंडर उठाया गया ताकि आपसी झगड़ों और भेदभाव में हमारी शक्ति का,संस्कृ ति का ह्रास हो। परंतु इसी भारत की भूमि पर ऐसे कवि भी हुए हैं जिन्होंने सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने का अथक प्रयास किया है। तुलसी, मीरा, कबीर, रहीम रसखान जायसी जैसे अनेक हिन्दू व मुसलमान कवियों ने अपनी वाणी से सांस्कृतिक एकता को बनाए रखने का प्रयास किया। जायसी ने सामाजिक समरसता कायम करने हेतु हिंदू मुस्लिम संस्कृतियों में मेल कर सांस्कृतिक एकता को बहुत खूबसूरती से अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। इसके लिए उन्होंने प्रेम को आधार बनाया।जायसी कहते हैं कि इस जगत में प्रेम ही सब कुछ है और प्रेम मनुष्य और मनुष्य के बीच की खाई को पाटता है। इसी प्रेम केआधार पर सूफी कवि जायसी ने धर्म, जाति, वर्ग,वर्ण से परे रहकर सामाजिक समरसता को स्थापित करने की कोशिश की। उन्होंने हिंदू घरों में प्रचलित प्रेम गाथाओं को माध्यम बनाकर श्पद्मावतश जैसे महाकाव्य की रचना की और उसमें भारतीय संस्कृति के मुख्य तत्वों को उजागर करने का प्रयास किया है। जैसे 'पद्मावत' के 'मंडप गमन खंड' में राजा शिव मंदिर में जाता है वह शिव के दर्शन करता है और सिंह चर्म बिछाकर तप करने लगता है। 'बसंत खंड' में बसंत पंचमी के दिन सखियों सहित पद्मावती के महादेव के मंडप में पहुंचने का वर्णन है, विवाह के अवसर पर ज्योनार का वर्णन साथ ही बारहमासा षट ऋतु वर्णन भी पद्मावत में देखने को मिलता है। 'नागमती वियोग खंड' में जायसी ने अवध के गांव की समस्त सांस्कृतिक परंपरा व मूल्यों को बारहमासा के माध्यम से व्यक्त किया है।सावन में नाग पंचमी,फागुन में होली आदि त्यौवहारों का वर्णन व लोक संस्कृति का अनोखा चित्रण पद्मावत में दिखाई देता है। 'रत्न सिंह पद्मावती विवाह खंड' में लगन से लेकर विवाह संपन्न होने तक का हिदू विवाह परम्परा का सुंदर वर्णन मिलता है।क्षत्राणियों के जोहर एवं सती होने आदि का वर्णन भी जायसी के काव्य में दिखाई देता है। हिंदू रीति–रिवाजों, तीज त्योहारों, खानपान, वेशभूषा आदि के वर्णन द्वारा जायसी ने सांस्कृतिक एकता के जरिए सामाजिक समरसता को व्यक्त किया है। जायसी ने 'कन्हाकत' के माध्यम से जिस सांस्कृतिक एकता की बात की है, वह प्रदिप्त अथवा थोपी हुई नहीं है, बल्कि वह उस सहज भावभूमि पर संचरित है जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा की मुक्तावस्था एवं भेदों से दूर होकर प्रयाण की ओर अग्रसर होता है। उन्होंने प्रचलित भारतीय सास्कृतिक परम्पराओं से जुड़ने एवं उनका प्रतिनिधित्व करने का प्रयास किया है। उन्होंने सुफी मान्यता के साथ ही भारतीय जनता के समक्ष प्रेममार्ग और प्रेम की पीर के ऐसे आदर्श उपस्थित किये,जिनका पालन किसी भी प्रचलित सांस्कृतिक परम्परा के अतिक्रमण के बिना आसानी से किया जा सकता है। इस प्रकार जायसी ने भारत में भावात्मक एकता के साथ–साथ मिश्रित सास्कृतिक परम्पराओं का भी सूत्रपात किया। जायसी ने अपने साहित्य में हिन्दू कथाओं में सूफी सिद्धान्तों को इस तरह गूंथा है कि जिससे हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही उसमें रस ले सके।

धर्म, अध्यात्म व दर्शन

किसी भी समाज को जोड़ने या तोड़ने का आधार धर्म है। धर्म के बलबूते पर किसी भी समाज को तोड़ना बहुत आसान क्योंकि धार्मिक कट्टरता मनुष्य और मनुष्य के बीच की खाई को बढ़ाती है,समाजिक बन्धुत्व में बाधा उत्पन्न करती है। हमारा भारत देश धर्मनिरपेक्ष देश है। जहां अनेक धर्मों में भेद होते हुए भी उनमें एक सांस्कृतिक एकता है। त्याग और तप मध्यम मार्ग संयम की भावना हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख आदि सभी धर्मों में समान रूप से विद्यमान है। हमारे समाज में एक धर्म के आराध्य दूसरे धर्म के महापुरुष के रूप में स्वीकार किए गए हैं। मैत्री, करुणा, दया, प्रेम और आदर की शिक्षा हमारे सभी धर्मों में दी जाती है। सिख गुरुओं विशेषकर गुरु नानकदेव और गुरु गोविंद सिंह के काव्य में राम नाम की महिमा गायी गई है। गुरु ग्रंथ साहिब'' में कबीर व सूफी संतों की वाणी सुरक्षित है। उनका नित्य पाठ होता है। इसके अतिरिक्त मुसलमान और ईसाई धर्म भी भारतीय धर्म से बहुत कुछ समानता रखते है। उनकी क्षमा और दया बौद्ध धर्म से मिलती है।मौलिक सिद्धांतों में हिंदू ईसाई धर्म में समानता है।भारतीय सूफी कवियों ने वेदांत की भूमि को अपनाया है। उनके ग्रंथों में हिंदू परंपराओं, कथाओं, विचारों, देवी–देवताओं और प्रतीकों का समावेश हुआ है। हमारे समाज से धार्मिक व जातिगत मतभेद को दूर करने का प्रयास अनेक कवियों ने समय–समय पर किया है। भक्ति काल इस दृष्टि से प्रमुख रहा है। इस मतभेद को दूर करने के लिए जायसी जैसे सूफी कवियों ने दांपत्य प्रेम को अध्यात्म का प्रतीक मानकर उस के माध्यम से विश्व प्रेम का संदेश दिया है और हिंदुओं को उच्च स्थान दिया। अपने काव्य में उन्होंने नायक नायिका का पद हिंदुओं को दिया और उनके सम्मुख मुसलमान को शैतान के रूप में चित्रित किया है। मूर्ति पूजा के प्रति उनका झुकाव रहा है। रतन सिंह का शिव की उपासना, पद्मावती का सहेलियों के साथ महादेव की पूजा आदि यह प्रमाणित करता हैं कि जायसी ने मूर्ति पूजा का समर्थन

किया है। जायसी निर्गुण और सगुण दोनों के उपासक थे।उन्होंने पद्मावत के 'स्तुति खंड' में ईश्वर के निर्गुण रूप की वंदना की है किंतु ब्रह्म की उपासना उसके सगुण रूप के अंतर्गत आने वाले सांसारिक बंधनों के द्वारा की है। इस तरह जायसी ने निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में सामंजस्य स्थापित किया है। उनका मानना है कि धार्मिक विवाद व्यर्थ है। ईश्वर एक है।

जायसी ने अध्यात्म व दर्शन में भी सामंजस्य स्थापित कर सामाजिक समरसता का प्रयास किया है। पद्मावत में सूफ़ी साधना तथा भारतीय चिंतन धारा, जैसे हठयोगियों, सहजयानी सिद्धों तथा नाथ योगियों की साधना का सुंदर समन्वय हुआ है। वह एक साथ इस प्रकार घुल मिल गई हैं कि एक दूसरे से पृथक नहीं मालूम होती। योग ग्रंथों में खंड के ऊपर कैलाश तथा विभिन्न क्षेत्रों की स्थिति एवं उनके रंग बतलाए गए हैं। जायसी ने चक्रों के रंगों का संकेत 'सातहु रंग नग लागू' से किया है।उन्होंनेश्सात समुद्र खंड' में भी इस की ओर संकेत किया है।सात समुद्र वर्णन में उन्होंने सूफी मार्ग की सात मंजिलें भी बतायी हैं।चांद और सूरज का प्रतीक जायसी ने हठयोग आदि से ग्रहण किया है। पद्मावत में रत्नसेन को सूरज तथा पद्मावती को चांद कहा गया है फिर दोनों के प्रेम विवाह का वर्णन हुआ है।सिद्ध सिद्धांत के अनुसार श्ह' का अर्थ है 'सूर्य' और 'ठ' का अर्थ है 'चंद्र' हठयोग इन्हीं दोनों के योग को कहते हैं। इसी प्रकार नाथपंथी कहते हैं कि शक्ति की साधना के लिए बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं जगत का प्रत्येक प्राणी उसे इच्छा, क्रिया और ज्ञान के रूप में अनुभव कर सकता है।वह ब्रह्मांड के कण–कण में परिव्याप्त है।यह शक्ति मानव देह में कुंडलिनी रूप में स्थित है। नाथ मार्ग की इस शक्ति की उपासना जायसी ने भी स्वीकार की है और कहा है षाढ़ जस बाँक जैसी तोरी काया।परखि देखु तौं ओहि की छाया।'' जायसी एकेश्वरवाद के कायल हैं। आत्मा और परमात्मा के मिलन में अहम बाधक होता है और अहम के विनाश की बात जायसी ने भी कही है–

तुम मुझसे कोई न जीता, हारे बररूचि भोज पहले आपु जी खोवे करे तुम्हारा खोज।'' यहां जायसी ने अपने आप को खोने अर्थात अपने 'अहं' को मिटाने की बात कही है। जायसी कहते हैं तीनो लोको और चौदहों भुवन में प्रेम को छोड़कर और कुछ भी सुंदर नहीं है यह प्रेम का खेल अत्यंत ही कठिन और दुखदाई होता है लेकिन जो इस प्रेम के खेल को खेल लेता है वह दोनों लोको में तर जाता है। जायसी भारतीय दर्शन से प्रभावित रहे हैं। हठ योगियों की योग साधना का प्रभाव जायसी पर पड़ा हैः– ''नवौं खंड नव पौरी, औ तहँ बज्र केवार चारि बसेरो जो चढ़े सत सौ उतरे पार।'' यहां नाक कान मुंह आदि नव द्वार और दशम दार ब्रह्मरंध्र है इसके साथ ही सूफी मत के अनुसार साधक की चार अवस्था शरीयत तरीकत मार्फत और हकीकत का वर्णन भी यहां चार बसेरों के रूप में जायसी ने किया है। जायसी पर अद्वैतवाद का प्रभाव था इस तत्व दर्शन का मूल स्रोत वेदांत है। इनके अद्वैत में भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं था। इनके दर्शन में भारतीय स्रोत का तथा श्रवण परंपराओं सूफी आस्थाओं एवं मान्यताओं का मेल हुआ है। जिसमें वेदांत का अद्वैतवाद बौद्धों की करुणा जैनियों की अहिंसा और नाथ पंथियों की नैतिकता आदि का समावेश है। हिंदू मुस्लिम सांप्रदायिकता की भावना भारतीय समाज के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती रही है जायसी ने हिंदुओं के घरों में प्रचलित प्रेम कथाओं को आधार बनाकर प्रेम को जीवन का सार माना साथ ही हिंदू धर्म के मिथक को भी अपने काव्य में प्रश्रय दिया हिंदू देवी देवताओं को अपने काव्य में सम्मान के साथ समाहित किया जैसे पद्मावत में शिव पार्वती हनुमान आदि की उपस्थिति या कान्हावत में कृष्ण की कथा। जायसी का रहस्यवाद अद्वैतवादी रहस्यवाद है।भारतीय उपनिषादिक चिंतन में निहित ब्रम्ह जीव एक तत्व यानि अहम् ब्रह्मास्मि की धारणा के आधार पर अन–अल–हक की घोषणा जायसी ने की जिसका तात्पर्य है कि मैं ही खुदा हूं यह विचार भारतीय समाज के लिए दोनों धर्मों के मध्य संवाद के द्वार खोल देता है।जायसी ने अपने काव्य में दार्शनिक सिद्धान्त को अपनी समन्वयात्मक दृष्टि से ग्रहण किया हैं। उन्होंने सूफी चिंताधारा के अतिरिक्त भारतीय चिंताधारा जैसे श्रुतिदर्शन, हठ योगियों, सहजयानी सिद्धो, वेदों, पुराणों की साधना को भी समाविष्ट किया है।। वे वेदों को भी कुरान के समान अपौरुषेय मानते हैं। वेदों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए' पद्मावत 'में कहा है–

वेद क्चन मुख साच जो कहा। सां जुगजुग स्थिर होह रहा।।
इसी प्रकार कन्हा वत' में भी जायसी ने वेदों और पुराणों का उल्लेख किया है ––
ष्प्रथम जो भा मानुस के भेसू।
सिरजा असा बिस्नु महसू।।
असा उरझा बेद पुराना।
महा देव माया लिपटाना।।''

काव्य रूढ़ियाँ एवं भाषा–शैली

काव्य रूढ़ियों, शैली व भाषा की दृष्टि से भी जायसी ने समाज में समरसता की भावना का प्रचार किया है। जायसी का पद्मावत जैन साधक कवियों द्वारा रचित चरित काव्य परंपरा से प्रभावित रहा है।इस प्रकार के काव्य में ऐतिहासिक वृत्त, कल्पित तथा अर्ध कल्पित कथा होती है और प्रेम को प्रधानता दी जाती है। इतिहास कम कल्पना अधिक होती है इन काव्यों की शैली जीवन चरित्र की शैली होती है जिसमें पूर्वज माता–पिता उसके देश और नगर आदि का वर्णन मिलता है। प्रेम वीरता आश्चर्य उत्पन्न करने वाली घटनाएं अलौकिक या अति मानवीय शक्तियों का वर्णन जो नायक के जीवन में तरह तरह के परिवर्तन लाते हैं समाहित होते हैं। प्रेम के उदय प्रसंग में स्वप्न दर्शन चित्र दर्शन गुण श्रवण आदि का उल्लेख,नायिका को पाने के लिए नायक को जाना, विघ्न बाधाओं का सामना करना आदि की अभिव्यक्ति होती है। जायसी काव्य में इस प्रकार के उल्लेख दिखाई देते है। मसनबी फारसी की शैली है यह एक प्रकार का एक छंद भी है जिसका उपयोग लंबे–लंबे वर्णनात्मक काव्यों के लिए किया जाता है।जायसी ने इसका प्रयोग किया है। जायसी ने जिस प्रकार सिंहल द्वीप और उसके हाट बाजार आदि का वर्णन किया है ऐसा वर्णन अपभ्रंश काव्य में मिलते हैं। जायसी के अनुसार सात समुद्रों के नाम जैसे क्षार,क्षीर दधि उदधि सुरा किलकिला तथा मानसर दिए हैं जो पुराणों में वर्णित है इससे ज्ञात होता है कि जायसी ने पुराणों से प्रेरणा लेकर उनका वर्णन अपने ढंग से किया है। शुक–सारिका तोता मैना आदि का संदेशवाहक के रूप में,कथा कहने व सुनने वाले के रूप में भारतीय काव्य में किया गया है। भारतीय काव्य में नायिका का सरोवर में स्नान करने जाना तथा सखियों सहित जलकेली करना आदि भारतीय कथानक रूढ़ि का रूप है जिसे जायसी में देखा जा सकता है। समुद्री यात्रा नौका दुर्घटना आदि वर्णन भाग्य की विडंबना अलौकिक शक्तियों का समावेश आदि जादू चमत्कार इन सभी के दर्शन पद्मावत में होते हैं। रमादानव रत्नसेन और पद्मावती की नौका को समुद्र में भटका कर डुबो देता है वहां समुद्र और उसकी उसकी कन्या लक्ष्मी उनकी सहायता करती हैं। कुटनी कथानक रूढ़ि भारतीय साहित्य में अत्यंत सुपरिचित है जायसी ने कुटनी प्रसंग को उसके समान वर्णित किया है। क्षत्राणियों के जोहर दो पत्नियों का होना पति की मृत्यु पर दोनों का सती होना आदि प्रसंग भी भारतीय काव्य रूढ़ि है जिसे जायसी ने अपनाया है।जैन कवियों ने अपने काव्य में लौकिक जीवन को नहीं भुलाया और चिर–परिचित घटनाओं को आंखों से ओझल नहीं होने दिया, लोकगाथा का सहारा लिया है इन सारी बातों में जायसी की उनसे समानता है।

भाषा के स्तर पर भी जायसी ने समरसता को ध्यान में रखा है।जायसी ने पूर्वी बोली से ओतप्रोत अवधी भाषा को अपनाया। मुसलमान तथा कुरान के ज्ञाता होते हुए भी जायसी ने तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी तत्सम अवधी हिंदी फारसी संस्कृत के प्रति उदार दृष्टि रही है तथा वे भारतीय संस्कृति कहानी विचार आदि का दामन नहीं छोड़ सके। जायसी का अवधी पर पूर्ण अधिकार था।वह अवधी की बारीकियों से पूर्णतया अवगत थे इनकी अवधी अपने नीज की मिठास लिए हुए हैं उन्होंने अवधी को घर की चारदीवारी से निकालकर पठन–पाठन के योग्य बनाया। उनकी रचनाओं में कुरान, वेद,के प्रतीकों एवं उपासना, अग्नि जल वायु के रूप में भारतीय अद्वैतवाद तथा आदर्श पमानव के सिद्धांतों का स्थान स्थान पर चित्रण मिलता है। मुसलमान होते हुए भी इन्होंने हिंदू समाज व जीवन के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित की है।इनकी रचनाओं में भारतीय धर्म व शैली का समावेश है।दोहा और चौपाई सोरठा इनके प्रिय छंद हैं।जायसी की शैली फारसी थी किंतु भाषा ठेठ अवधी छंद अरबी–फारसी परंपरा से नहीं लिए गए बल्कि इन्होंने दोहा और चौपाई को अपनाया। उन्होंने कथानक रूढ़ियां भी भारतीय परंपरा से ली जैसे बारहमासा षटऋतु वर्णन शुक–शुकी संवाद, आकाशवाणी आदि हिंदुओं के होली दिवाली त्यौहारों की चर्चा तथा लोक तत्व को समाहित करना हिंदू रीति रिवाजों की चर्चा करके जायसी ने हिंदुओं व मुसलमानों को सहचार्य व प्रेम के साथ रहने की मानसिकता प्रदान की।

जायसी का स्वभाव निर्मल और सरल था।वे विनम्रता के कायल थे और स्पष्ट वक्ता भी। उनके अंदर सभी के लिए प्रेम था। उनका व्यक्तित्व भेदभाव से मुक्त सरसता और समानता की विशेषता से ओतप्रोत था। सामाजिक समरसता को कायम करने में जायसी का अद्वितीय और महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

संदर्भ सुचि

1. http://irgu. unigoa.ac.in
2. http://www.researchguru.net
3. http://www.sahityasetu.co.in
4. http://apps.nmu.ac.in